International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2023; 5(5): 14-18
Received: 20-03-2023
Accepted: 25-04-2023

संजय कुमार वर्मा
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लाँग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. स्वर्णलता त्रिपाठी
प्राचार्य, कृष्णा कालेज ऑफ एजुकेशन, मनगवाँ, रीवाँ, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
संजय कुमार वर्मा
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लाँग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों का अध्ययन

संजय कुमार वर्मा, डॉ. स्वर्णलता त्रिपाठी

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों का अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श के रूप में चयनित रीवा जिले के सभी विकासखण्डों से 5–5 विद्यालय कुल 45 विद्यालयों, प्राथमिक विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 180 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्रधानाध्यापक, 2–2 अभिभावक कुल 180 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 900 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया किया गया है। शोध क्षेत्र के 93.33 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 79.44 प्रतिशत शिक्षक, 65.56 प्रतिशत अभिभावक व 76.56 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों में अपेक्षाकृत वृद्धि हो रही है। शोध क्षेत्र के 95.56 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 85.56 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है कि प्राथमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020' के प्रावधानों के अनुरूप प्रशिक्षण दिये जा रहे है।

कुटशब्दः रीवा जिला, प्राथमिक स्तर, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020, क्रियान्वयन, पाठ्य सहगामी गतिविधि

1. प्रस्तावना
अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का विचार प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था की देन है अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का नारा सबसे पहले 19वीं शताब्दी के मध्य में पश्चिमी देशों में दिया गया। स्वीडन में सबसे पहले सन् 1842 में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की गयी। इसके पश्चात् सन 1852 में अमेरिका में इस व्यवस्था को अपनाया गया। सन् 1860 में नार्वे में, सन् 1970 में इग्लैण्ड में तथा सन् 1905 हंगरी, पुर्तगाल, स्वीटजरलैण्ड आदि ने प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया।
सर्वप्रथम सुधार शिक्षा के ढाँचे में किया गया शिक्षा व्यवस्था में सुधार करते हुए 10+2+3 व्यवस्था को अपनाया गया। जिसमे देश की व्यवस्था के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारण किया गया। इसमें ऐसी शिक्षा प्रदान करने की बात कही गयी जिससे लोकतंत्र कर उद्देश्यों की प्राप्ति सम्भव हो सकें। इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं लोकतंत्रीय शिक्षा के गुणों को प्रमुख स्थान दिया गया।
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार सभी को शिक्षा के समान अवसर प्रदान करने की बात कही गयी। शिक्षा प्रदान करने का माध्यम मात्रभाषा और क्षेत्रीय भाषा को बनाया गया। शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा, उच्च प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा में विभाजित कर दिया गया। सभी शिक्षा के स्तर हेतु पाठ्यक्रम के योजना के निर्माण की तैयारी भी की गई।
केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 21वीं सदी के भारत की जरूरतों को पूरा करने के लिये भारतीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव हेतु जिस नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 को मंजूरी दी है अगर उसका क्रियान्वयन सफल तरीके से होता है तो यह नई प्रणाली भारत को विश्व के अग्रणी देशों के समकक्ष ले आएगी। नई शिक्षा नीति, 2020 के तहत 3 साल से 18 साल तक के बच्चों को शिक्षा का अधिकार कानून, 2009 के अंतर्गत रखा गया है। 34 वर्षों पश्चात् आई इस नई शिक्षा नीति का उद्देश्य सभी छात्रों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है जिसका लक्ष्य 2025 तक पूर्व–प्राथमिक शिक्षा (3–6 वर्ष की आयु सीमा) को सार्वभौमिक बनाना है। स्नातक शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, थ्री–डी मशीन, डेटा–विश्लेषण, जैवप्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों के समावेशन से अत्याधुनिक क्षेत्रों में भी कुशल पेशेवर तैयार होंगे और युवाओं की रोजगार क्षमता में वृद्धि होगी।
पहले की शिक्षा प्रणाली मूल रूप से सीखने और परिणाम देने पर केंद्रित थी। विद्यार्थियों का आकलन प्राप्त अंकों के आधार पर किया जाता था। यह विकास के लिए एक एकल दिशा वाला दृष्टिकोण था।

लेकिन नई शिक्षा नीति एक बहु–विषयक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता पर केंद्रित है। जिसका उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है। नई शिक्षा नीति एक नए पाठ्यक्रम और शिक्षा की संरचना के गठन की कल्पना करती है जो छात्रों को सीखने के विभिन्न चरणों में मदद करेगी।

नई शिक्षा नीति कई उपक्रमों के साथ रखी गई है जो वास्तव में वर्तमान परिदृश्य की जरूरत है। नीति का संबंध अध्ययन पाठ्यक्रम के साथ कौशल विकास पर ध्यान देना है। किसी भी चीज के सपने देखने से वह काम नहीं करेगा, क्योंकि उचित योजना और उसके अनुसार काम करने से केवल उद्देश्य पूरा करने में मदद मिलेगी। जितनी जल्दी एनईपी के उद्देश्य प्राप्त होंगे, उतना ही जल्दी हमारा राष्ट्र प्रगति की ओर अग्रसर करेगा।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार माध्यमिक शिक्षा स्तर पर योजना के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है। नई शिक्षा नीति का लागू होना शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक, साहसिक एवं दूरगामी दृष्टिकोण वाला कार्य है। इसके लिए शिक्षा मंत्रालय एवं मंत्री डॉ रमेश पोखरियाल निशंक बधाई के पात्र हैं। नई शिक्षा नीति को लागू करने के लिए मंत्रालय द्वारा रोडमैप भी तैयार किया गया है, जिसमें नीति के सभी प्रावधानों को लागू करने की एक समय सीमा तय की गई है। करीब 75 फीसद प्रावधानों को 2024 तक लागू करने का लक्ष्य है। इसी प्रकार बचे हुए प्रावधान भी वर्ष 2035 तक चरणबद्ध तरीके से लागू किए जाएंगे। नई शिक्षा नीति को लागू करने के लिए उच्च स्तरीय कमेटी भी गठित की जाएगी, जो केंद्र और राज्यों के बीच नीति के अमल पर हर साल समीक्षा करेगी।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

1. शोध क्षेत्र के प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों का अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के प्राथमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020' के प्रावधानों के अनुरूप प्रशिक्षण का अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पनाा से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. शोध क्षेत्र के प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों में अपेक्षाकृत वृद्धि हो रही है।
2. शोध क्षेत्र के प्राथमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020' के प्रावधानों के अनुरूप प्रशिक्षण दिये जा रहे है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला रीवा है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुचिलयान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्यौथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज हैं। अतः जिला अन्तर्गत प्राथमिक स्तर के विद्यालय इस अध्ययन सम्मिलित किए गए है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के प्राथमिक स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया ळें

6.2 साक्षात्कार विधि – शोध क्षेत्र रीवा जिले में प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों का अध्ययन की स्थिति की ज्ञात करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न प्रधानाध्यापक, अभिभावक, शिक्षक तथा छात्रों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

6.3 सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

6.4 शोध उपकरण –

सूचना या आंकड़े प्राप्त करने हेतु प्रयुक्त किये जाने वाले उपकरण –

1. साक्षात्कार अनुसूची
2. प्रश्नावली पत्रक

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित रीवा जिले के सभी विकासखण्डों से 5–5 विद्यालय कुल 45 प्राथमिक विद्यालयों, प्रत्येक विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 180 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्रधानाध्यापक, 2–2 अभिभावक कुल 180 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 900 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत

2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[1], कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार (2021)[2], कपिल, एच.के. (1996)[3], खुल्लर, के.के. (1988)[4], यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी (2006)[5], पाठक, सच्चिदानंद (2021)[6], मिश्र, गिरीश्वर (2020)[7]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है। इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. – 1 : "शोध क्षेत्र के प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों में अपेक्षाकृत वृद्धि हो रही है।"

सारणी 1 : शोध क्षेत्र के प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	न्यादर्श में चयनित संख्या	प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों में अपेक्षाकृत वृद्धि					
			हो रही है		नही हो रही है		पता नही	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्रधानाध्यापक	45	42	93.33	03	6.67	00	00
2.	शिक्षक	180	143	79.44	23	12.78	14	7.78
3.	अभिभावक	180	118	65.56	27	15.00	35	19.44
4.	छात्र	900	689	76.56	100	11.11	111	12.33
योग		1305	992	76.02	153	11.72	160	12.26
काई वर्ग (χ^2)			$\chi^2 = 1069.88$					
'पी' मान			0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक					

स्वतंत्रता के अंश 2
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5.99
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 9.21

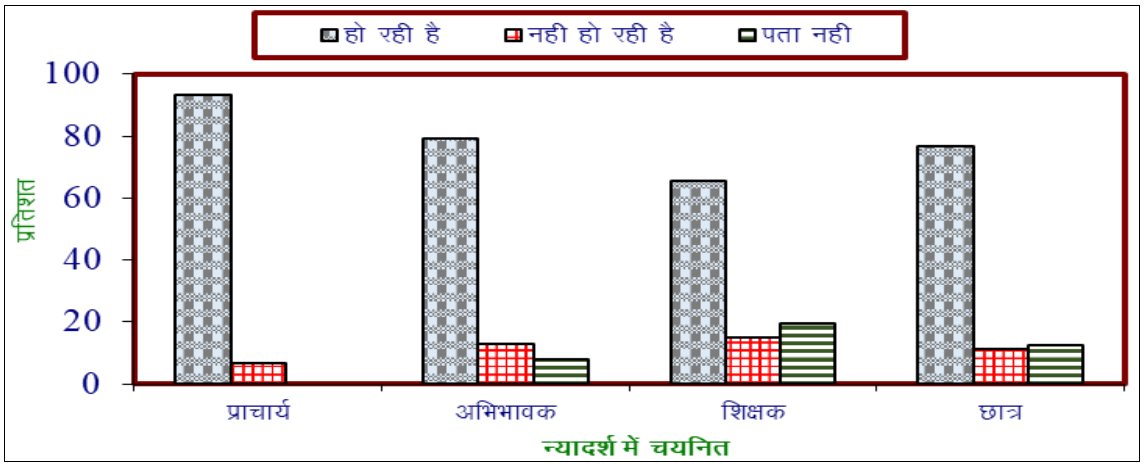

आरेख 1 : शोध क्षेत्र के प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों का अध्ययन

11. विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 में शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श में चयनित 05–05 प्रधानाध्यापक, कुल मिलाकर 45 प्रधानाध्यापकों, 20–20 अभिभावक व शिक्षकों कुल 180 अभिभावक व शिक्षक और इसी प्रकार 100–100 छात्र–छात्राएँ कुल 900 छात्रों से प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों से सम्बंधी जानकारियों का संकलन किया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े यह दर्शाते हैं, कि शोध क्षेत्र के 93.33 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 79.44 प्रतिशत शिक्षक, 65. 56 प्रतिशत अभिभावक व 76.56 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि

प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों में अपेक्षाकृत वृद्धि हो रही है।

न्यादर्श में चयनित कुल 1305 अभिमतदाताओं में से 76.02 प्रतिशत अभिमत है कि प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों में अपेक्षाकृत वृद्धि हो रही है, 11.72 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों में अपेक्षाकृत वृद्धि नहीं हो रही है, जबकि 12.26 प्रतिशत अभिमत है कि इस संबंध में पता नही।

इसी प्रकार तीनों समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है, क्योंकि गणना से प्राप्त 'काई' वर्ग का मान 1069.88 आया है, जो कि 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर एवं स्वतंत्रता के अंश 2 पर सारणी के मान क्रमशः 5.99 एवं 9.21 से अधिक है। अतः उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र के प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों में अपेक्षाकृत वृद्धि हो रही है।

परिकल्पना क्र. – 2 : "शोध क्षेत्र के प्राथमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020' के प्रावधानों के अनुरूप प्रशिक्षण दिये जा रहे है।"

सारणी 2 : शोध क्षेत्र के प्राथमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020' के प्रावधानों के अनुरूप प्रशिक्षण का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	न्यादर्श में चयनित संख्या	प्राथमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020' के प्रावधानों के अनुरूप प्रशिक्षण					
			दिए जा रहे है		नही दिए जा रहे है		पता नही	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्रधानाध्यापक	45	43	95.56	02	4.44	00	00
2.	शिक्षक	180	154	85.56	16	8.89	10	5.56
योग		225	197	87.56	18	8.00	10	4.44
काई वर्ग (χ^2)			$\chi^2 = 298.11$					
'पी' मान			0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक					

स्वतंत्रता के अंश 2
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5.99
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 9.21

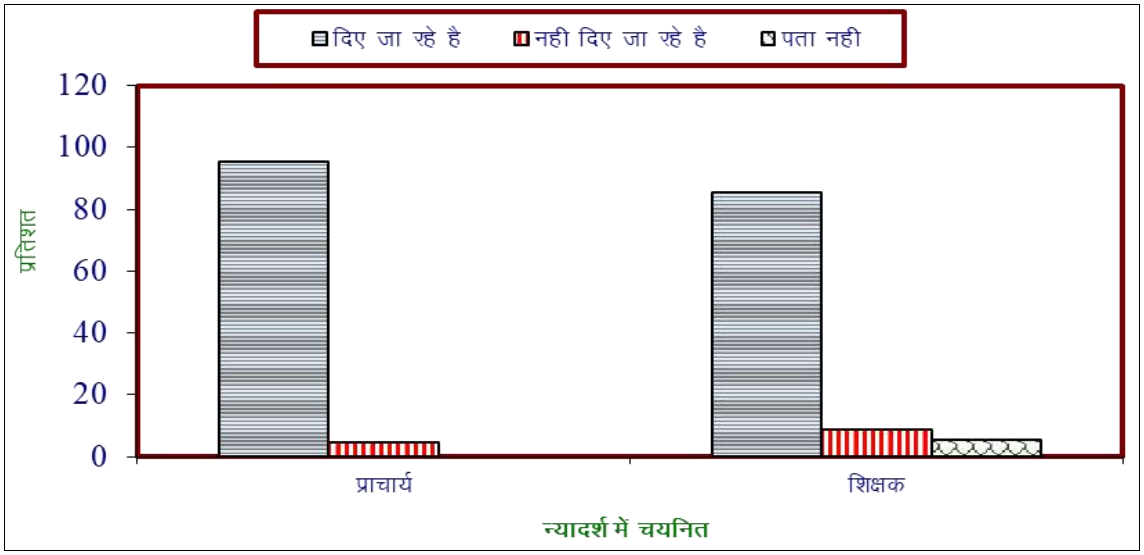

आरेख 2 : शोध क्षेत्र के प्राथमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020' के प्रावधानों के अनुरूप प्रशिक्षण का अध्ययन

12. विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 2 में शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श में चयनित 05–05 प्रधानाध्यापकों, कुल मिलाकर 45 प्रधानाध्यापकों, 20–20 शिक्षकों कुल 180 शिक्षकों से प्राथमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020' के प्रावधानों के अनुरूप प्रशिक्षण से सम्बंधी जानकारियों का संकलन किया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 2 के ऑकड़े यह दर्शाते हैं, कि शोध क्षेत्र के 95.56 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 85.56 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है कि प्राथमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020' के प्रावधानों के अनुरूप प्रशिक्षण दिये जा रहे है।

न्यादर्श में चयनित कुल 225 अभिमतदाताओं में से 87.56 प्रतिशत अभिमत है कि प्राथमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020' के प्रावधानों के अनुरूप प्रशिक्षण दिये जा रहे है, 8.00 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के प्राथमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020' के प्रावधानों के अनुरूप प्रशिक्षण नहीं दिये जा रहे है, जबकि 4.44 प्रतिशत अभिमत है कि इस संबंध में पता नही।

इसी प्रकार तीनों समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है, क्योंकि गणना से प्राप्त 'काई' वर्ग का मान 298.11 आया है, जो कि 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर एवं स्वतंत्रता के अंश 2 पर सारणी के मान क्रमशः 5.99 एवं 9.21 से अधिक है। अतः उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र के प्राथमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020' के प्रावधानों के अनुरूप प्रशिक्षण दिये जा रहे है।

13. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि न्यादर्श में चयनित कुल 1305 अभिमतदाताओं में से 76. 02 प्रतिशत अभिमत है कि प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों में अपेक्षाकृत वृद्धि हो रही है, 11.72 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र प्राथमिक शिक्षा स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अपेक्षाकृत 2020 के क्रियान्वयन के फलस्वरूप पाठ्य सहगामी गतिविधियों में अपेक्षाकृत वृद्धि नहीं हो रही है, जबकि 12.26 प्रतिशत अभिमत है कि इस संबंध में पता नही।

न्यादर्श में चयनित कुल 225 अभिमतदाताओं में से 87.56 प्रतिशत अभिमत है कि प्राथमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020' के प्रावधानों के अनुरूप प्रशिक्षण दिये जा रहे है, 8.00 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के प्राथमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020' के प्रावधानों के अनुरूप प्रशिक्षण नहीं दिये जा रहे है, जबकि 4.44 प्रतिशत अभिमत है कि इस संबंध में पता नही।

14. संदर्भ

1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमारः सतना जिले में किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं में मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Applied Research. 2021;7(1):400-403.
3. कपिल, एच.के. (1996) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
4. खुल्लर, के.के. (1988) : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नई दिल्ली विज्ञापन एवं दृष्य प्रसार निर्देशालय.
5. यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी (2006) : वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के समाधान में प्राचीन भारतीय शैक्षिक परम्पराओं की प्रासंगिकता। भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी. ई.आर.टी., वर्ष–24, अंक–3 पृष्ठ–75–84.
6. पाठक, सच्चिदानंद : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के महत्वपूर्ण प्रावधानः एक अध्ययन, Multidisciplinary Academic Research. 2021;18(6):216-220.
7. मिश्र, गिरीश्वर (2020) : नई शिक्षा नीति : संभावनाएँ और चुनौतियाँ, कंचनजंघा : पीयर रिव्यूड जर्नल, वर्ष 1 अंक 1, पेज 60–78.